आचार्य
श्री नरेंद्र मोदी

ACHARYA (CHANCELLOR)
SHRI NARENDRA MODI

उपाचार्य
प्रोफेसर विद्युत चक्रवर्ती

UPACHARYA (VICE-CHANCELLOR)
PROF. BIDYUT CHAKRABARTY

विश्वभारती
VISVA-BHARATI

(Established by the Parliament of India under
Visva-Bharati Act XXIX of 1951
Vide Notification No. : 40-5/50 G.3 Dt. 14 May, 1951)

संस्थापक
रवीन्द्रनाथ ठाकुर

FOUNDED BY
RABINDRANATH TAGORE

शांतिनिकेतन - 731235
SANTINIKETAN - 731235
जि.वीरभूम, पश्चिम बंगाल, भारत
DIST. BIRBHUM, WEST BENGAL, INDIA
फोन Tel: +91-3463-262 451/261 531
फैक्स Fax: +91-3463-262 672
ई-मेल E-mail : vice-chancellor@visva-bharati.ac.in
Website: www.visva-bharati.ac.in

सं./No.______________

दिनांक/Date.______________

मेरा नौवाँ संदेश

15 अगस्त, 2020

विश्वभारती पर आश्रित मेरे सहकर्मियों, छात्रों और अन्य हितधारकगण !

गुरुदेव टैगोर विश्वभारती को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण संस्था के रूप में देखना चाहते थे। यह दुखद है कि गुरुदेव के सपनों को पूरा करने के लिए काम करने के बजाय हमने विभिन्न स्थानीय एजेंटों,जिन्हें संस्था की हित की चिंता नहीं है,के पक्षपातपूर्ण और अक्सर नापाक हितों को प्राथमिकता देकर इस संस्था की विरासत और क्षमता को कम करके आंका है। हमारे प्रशासनिक प्रयासों का जानबूझकर गलत अर्थ लगाया गया है। जब भी उन्हें लाभ उठाने में कठिनाई हुई है,उन्होंने बड़े पैमाने पर बदनाम करने की कोशिश की है। विश्वभारती को पंगु बनाकर रखा गया है ताकि इसे केवल कुछ सुनिश्चित स्थानीय मुद् दों से जोड़ा जा सके।

विश्वभारती की छवि

चिंताजनक बात यह है कि विश्वभारती में शामिल होने की अनिच्छा बाहरी लोगों में इसलिए दिखाई देती है क्योंकि वे अनावश्यक प्रश्न पूछे जाने से डरते हैं। विश्वविद्यालय में कुलसचिव और वित्त अधिकारी के रूप में शामिल होने के लिए देश में अलग-अलग जगहों पर रहने वाले दो - तीन सुयोग्य व्यक्तियों को मनाने में विफल रहने में अनुभव हुआ कि उनकी आशंका बेबुनियाद

नहीं है। इसके अलावा, ऐसे अच्छे विद्वान हैं जो अपनी पसंद के अनुसार कहीं और नौकरी पाने के लिए विश्वभारती में कदम रखते हैं। यह निश्चित रूप से स्वयंसिद्ध नहीं है, क्योंकि पश्चिम बंगाल के बाहर से आए कई अच्छे विद्वानों ने विश्वभारती की प्रतिष्ठा को बनाए रखने और बढ़ाने में मदद की है। दुर्भाग्यवश उनकी संख्या तेजी से घट रही है। इसका एक कारण निश्चित रूप से विश्वभारती का साज़िशों का स्थान होना है जिसमें हर कोई चाहे किसी स्तर का हो,खुशी-खुशी फँसते चले जाते हैं और जान बूझकर अनिश्चितता की स्थिति पैदा कर लेते हैं। जो लोग इन दकियानूसी गतिविधियों से वास्तव में परेशान होते हैं, वे स्थिति को भाँपकर सुरक्षित बच निकलते हैं । अगर स्वार्थी डिजाइन को पनपने दिया जाए तो आज नहीं तो कल सभी पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। यह थोड़ा-बहुत प्रत्याशित था जब विश्वविद्यालय के अधिकारियों पर एक कुलपति की उपस्थिति में हमला किया गया था और इसकी पुलिस में शिकायत दर्ज नहीं की गई थी क्योंकि संभवत: परिसर में बड़े पैमाने पर विश्वभारती से जुड़े लोगों का पलायनवादी रवैया की वजह से जो लोग अन्याय केखिलाफ अनजान बने थे वे भी गुनहगारों को प्रोत्साहित कर रहे थे।

यह सच है कि हमारे सहयोगियों का एक समूह मौजूद था, जो कथित तौर पर राजनीतिक रूप से शक्तिशाली होने के कारण दूसरों पर हावी था।वह दूसरों के साथ गाली-गलौज एवं मार-पीट करता था। विश्वविद्यालय मानो एक युद्ध क्षेत्र था। मई, 2019 में उनकी गैरकानूनी मांगों के विरोध में खड़े होने पर मुझे उनके गुंडागर्दी का सामना करना पड़ा। 200 से अधिक गैर-शिक्षण सहयोगी मेरे निजी आवास, पुर्बिता में आए और 7वीं केंद्रीय वेतन आयोग का बकाया राशि देने के लिए धमकी देने लगे। मेरी महिला सहकर्मी, प्रो0 आशा मुखर्जी को भी नहीं बख्शा गया।उन्हें हर तरह से अपमानित किया गया।यह सब उस अनियंत्रित भीड़ का नेतृत्व करने वालों की उपस्थिति में हुआ। यह घटना यह साबित करने के लिए पर्याप्त थी कि जो लोग रबींद्रिक होने का दावा करते हैं, वे रबींद्रिक को छोड़कर कुछ भी हो सकते हैं।उनकी शारीरिक हरकत एवं मुझे,प्रो0 वीसी झा और प्रो0 आशा मुखर्जी को गाली देने के अंदाज से पता चलता है कि वे विभाजनकारी लाभ के लिए रबींद्रिक का चोगा पहने हुए हैं। 200 से अधिक गैर-शिक्षण सहयोगियों के इस समूह ने सोचा कि भीड़ की ताकत दिखाने से, वे कुलपति को अतीत की तर्ज़ पर घुटने टेकने पर मजबूर कर देंगे।इसलिए, जब वे कुछ नहीं कर सके तो वे कुलपति की नीयत पर सवाल उठाने के लिए बैठकर योजना बनाने लगे। 19 अक्टूबर, 2019 की घटना एक और ऐसा उदाहरण है जब कुलपति को एक स्थानांतरण आदेश वापस लेने के लिए मजबूर करने के लिए तालाबंद कर दिया गया था क्योंकि यह विश्वविद्यालय के तथाकथित वास्तविक शासक

कर्मी सभा से परामर्श के बिना जारी किया गया था। कर्मी सभा के सदस्यों ने स्व-घोषित नेता (सेवानिवृत्त) के साथ मेरे कमरे में प्रवेश किया और सवाल किया कि मैंने उनके सहकर्मी के स्थानांतरण का दुस्साहस कैसे किया। मुझे नहीं लगता कि उन लोगों के लिए गुर्गा शब्द यहां अधिक उपयुक्त हैं। हालाँकि जैसे ही अन्य साथी परिसर में शांति और अमन के लिए खड़े हुए, उनका साहस भंग हो गया। हमने सीसीटीवी फुटेज में देखा कि ये स्वघोषित रबींद्रिक तेजी से गायब हो गए जिससे पता चलता है कि वे वास्तव में कितने कमजोर थे। हमारे सहयोगियों में से 86 को कारण बताओ नोटिस दिए गए और अधिकांश लोगों ने बिना शर्त माफी मांगी। हमने उन्हें एक और मौका दिया।तीन उपद्रवियों को छोड़कर, सभी ने माफी मांगी। एक उच्च स्तरीय न्यायिक समिति मामले की जाँच कर रही है कि उपद्रवियों को क्या सजा दी जाए। उपद्रवी कुलपति को उनकी निर्धारित भूमिकाओं का निर्वहन करने से रोकते हैं और उन्हें परेशान करते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि स्व-घोषित नेता (सेवानिवृत्त) अवश्यसंभावी परिणाम से बचने के लिए प्रयास कर रहे हैं। 19 अक्टूबर, 2019 की घटना में शामिल होने वालों के कैरियर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। नेता (सेवानिवृत्त) न्याययिक प्राधिकरण की चल रही विधिक जाँच प्रक्रिया के तनाव व परेशानी से बचने का प्रयास कर रहा है।

स०मान्य स्वरूप

विश्वभारती के कर्मी और कुलपति (जो वास्तव में एक बाहरी व्यक्ति हैं) के बीच बातचीत का एक पैटर्न रहा है।माँग नियमानुसार हो या न हो,प्रशासन द् वारा अनुमोदन किए जाने पर परिसर में शांति बनी रहती है और कुलपति की प्रशंसा अच्छे व्यक्ति कए रूप में होती है। प्रशासन जब नियम-विनियम को ध्यान में रखकर काम करता है तो खुशी गायब होने लगती है। स्थिति खराब हो जाती है क्योंकि अनुचित माँग स्वीकार नहीं की जाती है और इस तरह उन्हें अलग-थलग कर दिया जाता है। इस तरह कई माँग करने वाले नाराज हो जाते हैं।नतीजतन, कुलपति एक खलनायक बन जाता है और उपद्रवी कुलपति को हटाने के लिए मोर्चा बनाते हैं क्योंकि वह उनके स्व-संचालित एजेंडे को पूरा करने की दिशा में रूकावट है। इतिहास उस दावे की पुष्टि करता है जो मैंने हाल में किया है। विश्वविद्यालय में गड़बड़ी का एक प्रमुख कारण नियमों और विनियमों का उल्लंघन था जो गंभीर लेखापरीक्षा आपत्तियों से स्पष्ट है जिनमें हम सुधार कर रहे हैं। इसके अलावा, जैसा कि हाल में देखा गया है, पूर्व (स्थायी) कुलपति के पद छोड़ने के बाद जो विषम परिस्थितियां सामने आई थीं, उससे एक अराजक स्थिति पैदा हो गई

थी, जिसमें विश्वविद्यालय में कोई वैधानिक प्रधान नहीं रह गया था और कोई ठोस निर्णय नहीं लिया गया क्योंकि पदधारी के पास कोई स्वतंत्र अधिकार नहीं था। नतीजतन, विश्वविद्यालय विशेष समूह की जागीर बन गया, और स्थिति बदतर हो गई क्योंकि जो लोग औपचारिक रूप से विश्वभारती से जुड़े थे, वे उदासीन बने रहना पसंद करते थे। यह बहुत ही अपमान की बात है कि कार्यालय परिसर में प्राधिकारियों की मौजूदगी में विश्वविद्यालय के अधिकारियों के साथ मारपीट की गई और इसकी रिपोर्ट पुलिस में नहीं की गई शायद इस डर से कि गहरे पैठ वाले शरारती तत्व कहीं विश्वविद्यालय प्रशासनिक प्रबंधन को परेशान न करे। इन अपमानजनक घटनाओं के खिलाफ हितधारकों की आवाज कभी उतनी जोर से नहीं उठी जितनी अपेक्षित थी, हालांकि इस घटना को पर्याप्त मीडिया कवरेज मिलने के बाद से यह सार्वजनिक मनोरंजन का स्रोत बन गया। मौका मिलने पर मैंने यह मुद्दा उठाया; और मुझे जो उत्तर मिला, वह मेरी आशंका की पुष्टि करता है कि हितधारकों की उदासीनता उनके स्वामित्व की भावना की कमी के कारण थी। 2018 में कार्यग्रहण के बाद, मैंने भी कुछ सहयोगियों की मानसिकता को महसूस किया जो विश्वभारती को अपना साम्राज्य मानते थे। मैंने इस संदेश में कुछ घटनाओं का जिक्र किया है जो मेरे निजी आवास, पुर्बिता में कुछ शैक्षणिक सहयोगियों की उपस्थिति में और परिसर में मेरे कार्यालय में हुई थीं, जो हमारे कुछ गैरशैक्षणिक साथियों द्वारा डराने-धमकाने के प्रयासों के अलावा कुछ भी नहीं थीं। वे प्रशासन पर पूर्ण नियंत्रण (या स्थानीय भाषा में दादागिरी) बनाए रखना चाहते थे। मुझे बताते हुए खुशी हो रही है कि स्थिति बहुत बदल चुकी है।शिक्षा के इस महान केंद्र से गहराई से प्यार करने वाले लोगों के एक साथ आने से, उपद्रवियों को यह महसूस हुआ कि 'जिसकीलाठी उसकी भैंस' नहीं है और न ही यह हमेशा अच्छे उद् देश्य से उठने वाले आवाज को बंद करने वाला प्रभावी उपकरण है। मुझे यह साझा करने में खुशी हो रही है कि परिसर के उपद्रवियों को हटाने की प्रक्रिया में भाग लेने के इच्छुक लोगों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, जो सामान्य दावे की पुष्टि भी करता है कि विश्वभारती का भविष्य उज्ज्वल है।

एक और स्वरूप है जो सामान्य से अलग है। यदि संकाय सदस्य, छात्र या हितधारक (स्व-केंद्रित स्थानीय व्यवसायी सहित) विश्वभारती प्राधिकारी से नाखुश हैं क्योंकि उनकी मांगें पूरी नहीं हुई हैं, तो वे तुरंत राष्ट्रपति,प्रधान मंत्री और अन्य गणमान्य व्यक्ति को लिखते हैं। यह आशा

करते हैं कि विश्वभारती प्रशासन उनकी मांगों को मानने के लिए बाध्य होगा, भले ही वे नियम और कानून के विरूद् ध हों। यह सच है कि विश्वभारती के पास देश के कुछ अन्य विश्वविद्यालयों की तुलना में संसाधनों का अभाव है। हमारे पास कॉर्पस फंड नहीं है ।मैंने इसके लिए अपने सहयोगियों से बार-बार स्वेच्छा से योगदान देने के लिए अनुरोध किया है। यह लगभग सभी शैक्षणिक संस्थानों में है। हमने हाल ही में एक कॉर्पस फंड शुरू करने के लिए स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में एक खाता खोला है और यह हमारी वेबसाइट पर दिया जा चुका है। आइए देखें कि यह कैसे बढ़ता है। हमने समाज के सामाजिक-आर्थिक रूप से हाशिए के वर्गों से आने वाले छात्रों की मदद करने के लिए एक योजना भी तैयार की है ताकि वे विश्वविद्यालय का शुल्क एवं अन्य प्रभार जमा कर सकें।मैं शिक्षकों, गैर-शिक्षण कर्मचारियों और अन्य हितधारकों से अपील करता हूं कि वे विश्वभारती के इस नेक उद्यम में अधिकाधिक योगदान दें। मैं उन सहयोगियों से भी आग्रह करूंगा जो माननीय प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति और अन्य गणमान्य व्यक्तियों को छोटी-छोटी बातों पर लिखते हैं उनसे हमारा लक्ष्य पूरा करने में मदद मिल सकती है। मैं इन सहयोगियों से आग्रह करके अपनी अपील को सुदृढ़ करता हूं जो स्वयं को भारत के असहाय और अनाथ लोगों के मसीहा होने का दावा करते हैं कि सिर्फ मुँह से कहने के बजाय व्यावहारिक रूप से मदद करने के लिए आगे आएँ क्योंकि जो अतीत से नहीं सीखता,इतिहास उन्हें माफ नहीं करता। यह इन संकाय सदस्यों के समय, चिंता और ऊर्जा का सर्वाधिक सदुपयोग होगा, अगर प्रयासों, शिकायतों और रचनात्मक आदानों को इन पत्रों में लिखने के बजाय विश्वभारती की स्थिति में सुधार के लिए वे अपने सहयोगियों और प्रशासन से हाथ मिलाएंगे ।

आगे बढ़ें

मेरे 7वें संदेश के आलोक में, मुझे अपने सहयोगियों से अच्छे सुझाव मिले हैं। उठाए गए मुद्दों पर विचार करने के लिए अपना कीमती समय निकालने के लिए उनकी सराहना करता हूं। उन्होंने शैक्षणिक सीमाओं सहित विश्वभारती की समस्याओं को स्वीकार किया जिसे मिल जुल कर दूर करने की आवश्यकता है। सहकर्मियों ने विश्वभारती के संकायों (विशेषकर शिक्षा भवन में) के लिए पर्याप्त ढांचागत सुविधा की कमी को उत्कृष्ट शोध करने में असमर्थ बताया जो स्वाभाविक रूप से हमारे नैक और एनआइआरएफ रैंकिंग पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। इस जानकारी को गंभीरता से लिया गया है।सरकारी विश्वविद्यालयों में अनुसंधान के लिए सरकारी धन की कमी

के मद्देनजर, केवल एक ही विकल्प जो हम तलाश कर सकते हैं, वह है निगमित संस्थानों सहित निजी स्रोतों से अनुसंधान के लिए धन प्राप्त करना। निगमित संस्थानों की कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी निधि की धनराशि हमारी विकासात्मक गतिविधियों के लिए धन का स्रोत हो सकता है। हमें सामूहिक रूप से इन स्रोतों का पता लगाना होगा। मैं यह भी साझा करना चाहता हूँ कि मैं माननीय कुलाधिपति महोदय के पास जाकर वन-टाइम डेवलपमेंट ग्रांट प्राप्त करने के लिए अथक प्रयास कर रहा हूं। मुझे उम्मीद है कि हमारा प्रयास सफल होगा जैसा कि विज्ञान विभाग के मेरे सहयोगियों की कुछ चिंताओं को दूर करने में मदद मिली है। मेरे सहयोगियों ने बताया कि कुछ फाइलों के निपटान में नौकरशाही के कारण विलंब होता है। यह भी मूल मुद् दा है जिस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। प्रशासन अक्षम है क्योंकि नियम और विनियम के अनेक मामलों में उल्लंघन के लिए विश्वविद्यालय, मंत्रालय द्वारा जांच के दायरे में है। वित्तीय लेन-देन से संबंधित फाइलों के निपटान में देरी होती है जिनमें वित्त अधिकारी और आंतरिक लेखापरीक्षा अधिकारी का मंतव्य आवश्यक होता है। विश्वविद्यालय के कर्मचारियों सदस्यों द्वारा जीएफआर के उल्लंघन के कई उदाहरण हैं। यहां, मैं उल्लेख करना चाहता हूं कि हमारे एक संकाय सदस्य जिन्होंने जीएफआर के नियमों का उल्लंघन करते हुए एक परियोजना के लिए 38 लाख खर्च किए हैं। अगर हमारे सहयोगी इस प्रकार की नापाक हरकतों में शामिल हैं, तो इसका क्या समाधान है? नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक प्रशासन को जिम्मेदार ठहराएगा। हमारे सहयोगियों द्वारा वित्तीय अनियमितताओं के ऐसे कई मामले हैं। हमने हाल ही में पाया है कि हमारे एक सहयोगी ने एक ही दावे के लिए दो बिल प्रस्तुत किए: एक फरवरी, 2020 में और दूसरा जुलाई, 2020 के अंत में। यदि हम वित्तीय दावों की सख्ती से जाँच नहीं करते तो हमें गलत ठहराया जाता। हमें सच्चा और भरोसेमंद होना चाहिए। मैं प्रशासन के नौकरशाही के खिलाफ हूं,लेकिन इसका कोई विकल्प नहीं है। मैं अपने सहकर्मियों से आग्रह करता हूं कि कृपया हमारे कार्यालय में आकर हमारे सहयोगियों द्वारा की गई वित्तीय अनियमितताओं के बारे में लेखापरीक्षा अभ्युक्ति की जांच करें। हमें नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के मानक के अनुसार उनमें सुधार करने की आवश्यकता है; अन्यथा विश्वविद्यालय को भारी जुर्माना देना होगा।बहुत शर्म की बात है कि यह सबको पता भी है कि हमारे कर्मचारियों की मिलीभगत से एक दिवंगत कर्मचारी को नियमित रूप से वेतन जारी किया जा रहा था। यह चार वर्षों से चल रहा था जिसे प्रशासन द्वारा कुछ महीने पहले रोका

गया। फंडिंग एजेंसी से हमारे नियमित वित्तीय अनुदान के इनकार से बचने के लिए मार्च, 2021 तक 47 ऐसे वित्तीय घपलेबाजी के मामलों को सुधारने की आवश्यकता है।

अब, हम नैक की दूसरी मान्यता की तैयारी में लगे हुए हैं और मेरे सभी सहयोगी दिन-रात काम कर रहे हैं ताकि विश्वभारती को वह रैंक मिले जिसके वह हकदार हैं। मुझे समझ में आया है कि पिछली बार विश्वभारती की बी+ नैक रैंक आंशिक रूप से अंदर से जोड़-तोड़ का परिणाम था। यह स्पष्ट हो गया जब नैक टीम का दौरा करने वाले सदस्यों में से एक को यह कहने के लिए मजबूर किया गया कि "यह शिकायत निवारण समिति नहीं है"। हमारे कई सहयोगियों ने, शायद विश्वभारती में व्यावसाय करने के इच्छुक बाहरी लोगों के साथ मिलकर इस घिनौने कृत्य में भाग लिया। वे भूल गए कि नैक की निम्न रैंकिंग न केवल विकास के लिए अधिक अनुदान के लिए विश्वभारती पर एक स्थायी प्रतिबंध लगाएगी बल्कि यह शिक्षा के केंद्र के रूप में अपनी छवि को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करेगी जिसके साथ गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की महान विरासत जुड़ी हुई है। यह एक तरह से आत्महत्या था जिसे हममें से कुछ लोगों ने कहा कि नियमित रूप से सोने के अंडे देने वाली लौकिक हंस को मारने से खुशी मिलती है। हमारे पिछले अनुभवों को देखते हुए, मैं अपने सभी सहयोगियों और अन्य हितधारकों से इस बार नैक मान्यता के लिए मिलकर काम करने का आग्रह करता हूं क्योंकि अच्छी ग्रेडिंग हम सभी के लिए अच्छी होगी। हमारे बौद्धिक संसाधनों और हमारे सहयोगियों की कड़ी मेहनत के साथ, उच्च नैक ग्रेड (विश्वभारती की स्वाभाविक प्रतिष्ठा के आलोक में) अप्राप्य नहीं लगता है।

मैं बहुत आशावादी हूं कि हम सब साथ मिलकर अब तक के संकटों से सफलतापूर्वक निपटने में सफल होंगे, जिसने विश्वभारती को ग्रसित किया है। मुझे यकीन है कि ईमानदारी, सच्चाई और कड़ी मेहनत से हमें अपना लक्ष्य हासिल करने में मदद मिलेगी। इन मूल्यों की शक्ति के एक उदाहरण के रूप में, मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव को बताता हूं कि कैसे सार्वजनिक परिवहन (भूमिगत रेलवे, बस सेवा) पश्चिम यूरोपीय देशों में और विशेष रूप से स्कैंडिनेवियाई देशों में बहुत कुशलता से चलता है। यह बहुत आश्चर्य की बात है कि सार्वजनिक परिवहन से यात्रा करने वालों से किराए लेने के लिए शायद ही कोई मानव अधिकारी हो। सार्वजनिक परिवहन में यात्रा करने वालों को न तो रोका जाता है और न ही उनसे टिकट या पास दिखाने के लिए कहा जाता

है। कुछ भूमिगत ट्रेनों में तो चालक भी नहीं होते। टिकट-चेकर्स की अनुपस्थिति के बावजूद, इन देशों में सार्वजनिक परिवहन प्रणाली शायद ही अपनी सेवाओं को बनाए रखने के लिए धन की कमी के कारण बंद हुई हो। व्यवस्था विश्वास से चलती है, और इन देशों के नागरिकों की सत्यता; वे न तो सार्वजनिक प्राधिकरण को धोखा देते हैं और न ही उस सेवा के लिए भुगतान न करने का विचार लाते हैं जो सार्वजनिक परिवहन प्रणाली उन्हें प्रदान करती है। यहां हम सभी के लिए एक सबक है। एक बड़ी सार्वजनिक सुविधा को संदेह के आधार पर जनता के लिए उपलब्ध नहीं कराया जाता है, बल्कि विश्वास और सत्यनिष्ठा के आधार पर सार्वजनिक परिवहन में यात्रियों के व्यवहार के प्रतिमान पर। मेरे पास यह मानने के पुख्ता कारण हैं कि हम, विश्वभारती में, उस मिशन के लिए भरोसेमंद और ईमानदार हैं जिसे गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने 1921 में विश्वभारती की स्थापना के साथ शुरू किया था। हर प्रणाली में,गड़बड़ी फैलाने वाले कुछ लोग होते हैं जो आसानी से हटाए जा सकते हैं। दो साल के करीब मेरे कार्यकाल में मैंने यह मानना शुरू कर दिया है कि मेरे अधिकांश सहयोगी और अन्य हितधारक उस महान उद्देश्य के लिए लड़ने के लिए प्रेरित हैं जो विश्वभारती की छवि को दर्शाता है। गुरुदेव द्वारा स्थापित विश्वभारती, हममें से अधिकांश के लिए, 21 वीं शताब्दी में उन दुर्लभ निवेश के साथ राष्ट्र-निर्माण में भाग लेने का अवसर है, जो अन्य विश्वविद्यालय की पहुंच से बाहर है क्योंकि यह समावेशी शिक्षा के लिए हमारे महान पूर्ववर्तियों के प्रयास से निरंतर रूप से विकसित हुई है। ।

विश्व भारती की विशिष्टता

किसी संस्था के पास ताकत और कमजोरियां दोनों होती हैं। चूंकि विश्वभारती ने गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की महान विरासत के साथ ज्ञान के सृजन और प्रसार के क्षेत्र में अपनी यात्रा शुरू की, जो विश्वविद्यालय में कर्मचारियों के रूप में शामिल होते हैं और जो सहज रूप से रबींद्रिक (अपने सकारात्मक अर्थ में) हैं, वे स्वतः ही समृद् ध परंपरा के उत्तराधिकारी बन जाते हैं जो 1921 में अपनी नींव के साथ शुरू हुई थी। विश्वभारती पारंपरिक विश्वविद्यालय नहीं है, यह एक विशिष्ट वैचारिक सांचे में मूल्यों को प्रसारित करने का एक तरीका है, जो सामान्य जनहित, वर्ग, पंथ और नैतिकता के बावजूद है। गुरुदेव ने अपना जीवन एक समावेशी समाज के लिए मानसिकता के निर्माण के लिए समर्पित किया क्योंकि उनका मानना था कि 'हम उस समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब युग की भावना एक पूर्ण मानवीय सत्य में अवतरित होगी और मानव एक हो जाएंगे' (रवींद्रनाथ टैगोर, 'the voice of humanity') । उनकी धारणा के मूल में वैश्विक स्थान का विकास था।

जहां मन में भय न हो
और सिर गर्व से ऊंचा रहे;
जहां ज्ञान मुफ्त मिले;
जहां दुनिया
संकीर्ण घरेलू दीवारों द्वारा; ...
टुकड़ों में न बँटे हों
जहां सब कुछ स्पष्ट हो
सुनसान रेगिस्तान ; ...
अपना रास्ता नहीं खोया हो
स्वतंत्रता के उस स्वर्ग में,
हे परमपिता! मेरे देश को जगा दो।

मैं इस संदेश को सुरक्षित और सतर्क रहने के अनुरोध के साथ समाप्त करता हूं, क्योंकि कोविद-19 का प्रकोप कम नहीं हुआ है। वायरस से बचने के लिए सामाजिक रूप से जुड़े रहने के दौरान भौतिक दूरी बनाए रखें एवं चिकित्सा पेशेवरों के निर्देशों का पालन करें।

भरोसा रखें।

बिद्युत चक्रवर्ती
25/08/2020

बिद् युत चक्रवर्ती

Vice-Chancellor
Visva-Bharati
Santiniketan
West Bengal-731235
India